वंदे मातरम्

राष्ट्र सेविका समिति

:: प्रधान कार्यालय ::

देवी अहल्या मंदिर, धंतोली, नागपूर - 440012

दूरभाष : 0712-2442097 फॅक्स : 0712-2423852

वार्ता

वर्ष : 22 अंक : 55 युगाब्द 5120 दिनांक :18.03.2018

सेवा की प्रतिमूर्ति

वं. सरस्वती ताई आपटे

(द्वितीय प्रमुख संचालिका)

निर्वाण दिन-9 मार्च

सरस्वति सिंधु कन्या छात्रावास-जालंधर (पंजाब)
गुरूकुल छात्रावास-पठानकोट
माता गुजरी चॅरिटेबल ट्रस्ट-पटियाला
अदिति कन्या छात्रावास-जम्मू
श्री शक्तिपीठ समर्था प्रकल्प छात्रावास-गुजरात
तेजस्विनी कन्या छात्रावास-बिलासपुर
गृहिणी विद्यालय-महिम
भगिनी निवेदिता आवासम-जगत्याल
शारदा कन्या छात्रावास-बंगलौर
तेजस्वी कन्या छात्रावास-नागरकोइल
संघमित्रा गर्ल्स हॉस्टल-मिजोरम

रुक्मिणी सेवा कन्या छात्रावास-अलुवा केरल
रानी रूद्रम्मा स्मारक समिति-भाग्यनगर
अपराजिता सेवा समिति-भाग्यनगर
वनवासी कन्या छात्रावास अहिल्या मंदिर-नागपुर
वं. ताई आपटे वसति गृह-तळेगांव
मैत्रेयी छात्रावास-चंद्रपुर (विदर्भ)
तेजस्विनी कन्या छात्रावास-यवतमाल
जयमति छात्रावास-गुवाहाटी (आसाम)
रानी मां गाईदीलु छात्रावास-हॉफलांग
त्रिगेश्वरी कन्या छात्रावास-गुसाइगांव

(सेवा है यज्ञ कुण्ड समिधा बन हम जले)

सरस्वति की बगिया में, सेवा के फुल खिले
तमस हटाकर नव प्रकाश भर, संस्कारों का स्नेह स्पर्श कर
ममता का जीवन रस भरकर, हंसता बचपन खिलता यौवन
जीवन को नित दिशा मिले
सरस्वति की बगिया में, सेवा के फुल खिले

अखिल भारतीय महाविद्यालयीन तरूणी कार्यशाला

अ.भा. महाविद्यालयीन तरूणी विभाग की कार्यशाला प्रथम बार ही दिनांक 16/17 दिसम्बर को दिल्ली में संपन्न हुई। यह कार्यशाला दीनदयाल उपाध्याय महाविद्यालय द्वारका, दिल्ली में आयोजित थी।

इस कार्यशाला में 18 प्रांतों से 49 प्रतिनिधि उपस्थित थे। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में सर्वोच्च न्यायालय की मा. ऐश्वर्याजी भाटी ने प्रेरक उद्बोधन दिया।

इस कार्यशाला में तरूणियों के मार्गदर्शन हेतु विभिन्न सत्रों में विभिन्न विषय मार्गदर्शकों ने लिये जैसे - महाविद्यालयीन तरूणि विभाग संकल्पना एवं कार्य इस विषय पर मा. भाग्यश्री साठे (अ.भा.तरूणी प्रमुख) का उद्बोधन हुआ। सामाजिक विकास में हमारी भूमिका यह विषय मा. श्रीमती राणाजी ने तरूणियों के सामने रखा। राष्ट्रीय विचार हेतु सोशल मिडिया में सक्रियता यह विषय मा. आभाजी खन्ना ने लिया। सुश्री विजयाजी शर्मा ने महाविद्यालय-विश्वविद्यालय छात्रावासों में संपर्क कैसे करें, यह विषय लिया। इसके साथ ही अनुभव कथन, पीपीटी द्वारा विषय प्रतिपादन, भूपेन हजारिका के सामाजिक स्थितियों को दर्शाने वाले गीत पर आधारित नृत्य प्रस्तुति इत्यादि अन्य कार्यक्रम भी संपन्न हुए। तरूणियों ने क्लास रूम में कर सकते हैं ऐसे कुछ योग खेल, गीत एवं अन्य कार्यक्रम संपन्न हुए। समापन सत्र में राष्ट्र सेविका समिति की अ.भा.कार्यवाहिका मा. अन्नदानम् सीताजी ने वर्तमान चुनौतियां और युवा शक्ति यह विषय मार्गदर्शन के लिये लिया।

प्रान्त महाविद्यालय तरूणी शिविर-जबलपुर

तरूणी सम्मेलन 27 जनवरी शनिवार से 31 जनवरी बुधवार प्रातः तक पं. लज्जाशंकर झा शासकीय मॉडल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में तीन दिवसीय महाविद्यालयीन तरूणी शिविर संपन्न हुआ। इस शिविर में कुल 42 शिक्षार्थी तथा प्रबंधिका शिक्षिका मिलाकर 60 संख्या में तरूणियां उपस्थित थीं। 30 जनवरी को पथ संचलन हुआ जिसमें जबलपुर महानगर की सेविकाओं को मिलाकर कुल 170 तरूणियों ने हिस्सा लिया। संचलन के पश्चात भारत माता की आरती हुई। मेरा जीवन मेरा कैरियर, राष्ट्रसेविका समिति कार्य परिचय शिक्षा जीवन के लिये जीवन, देश के लिये अपने अंदर की प्रतिभा को पहचान कर उसका विकास, लवजिहाद, व्यक्तित्व विकास इन विषयों पर डॉ. शिरीष जामदार जी, मा. सुमेधा पोलजी, डॉ. प्रशांत बाजपेई जी, डॉ. राजलक्ष्मी त्रिपाठी जी, मा. प्रशांत पोळजी, मा. सुमतिताई जी, मा. प्रतिमा बिसेन जी, मा. शशी दीदी द्वारा बौद्धिक चर्चा एवं पीपीटी के माध्यम से मार्गदर्शन दिया गया।

सार्धशती कार्यक्रम

भगिनी निवेदिता के सार्धशति वर्ष पर जनवरी 2018 को ब्रज प्रांत के मथुरा जिले में तरूणियों द्वारा तरूणियों के लिए एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसे युवा उड़ान यह नाम दिया गया।

कार्यक्रम दो सत्रों में रखा गया। तरूणियों को पूर्व में चार विषय दिये गये थे। प्रत्येक विद्यालय में कम से कम 20 और अधिक से अधिक 30 संख्या में आने का आग्रह किया गया। विषय की प्रस्तुति पत्रवाचन द्वारा करनी थी।

विषय थे -

1. युवा मन का राष्ट्रबोध
2. युवा और भारतीय संस्कृति
3. समाज सेवा और युवा
4. सोशल मिडिया द्वारा राष्ट्र का विकास

इसमें 14 विद्यालयों से 350 तरूणियां एवं 50 महिलाएं उपस्थित थी। पूरे प्रांत में इसी प्रकार 6 स्थानों पर भी कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस प्रकार पूरे प्रांत में 20 महाविद्यालय, 20 इंटरकॉलेज, 5 बी.एड., 2 ट्रेनिंग कॉलेज में संपर्क करके 1895 बहनों का सहभाग प्राप्त हुआ। मा. शरद रेणु जी लगभग सभी स्थानों पर उपस्थित रहीं।

विशेष वृत्त

1. भगिनी निवेदिता सार्धशति कार्यक्रम 29 प्रांतों में 226स्थानों में कुल सहभागी बहनों की संख्या 1789 थी।
2. 12 जनवरी युवा दिवस के कार्यक्रम 14 प्रांतों में 88 स्थानों पर हुए। कुल 5670 बहनों ने भाग लिया।
3. विदर्भ प्रांत में एक ही समय में 17 स्थानों में 8 पथसंचलन एवं 9 शोभायात्रा निकाली गई। सहभागी संख्या 1500 थी।
4. सुरत (गुजरात) में जीजामाता जयंति के अवसर पर घोष के साथ अभ्यास पूर्वक तैयारी कर पथ संचलन निकाला गया (गुणात्मक) अनुशासनात्मक दृष्टिसे संचलन बहुत अच्छा रहा। विशेषकर मुस्लिमों ने भी इस संचलन का पुष्प वर्षा से स्वागत किया, यह विशेष बात रही।
5. सुरत में समिति की बहनों द्वारा धार्मिक सेवा कार्यक्रम द्वारा विशेष प्रयोग किये गए जिसमें व्यसन मुक्ति प्रयोग मुख्य रहा। जिसमें नीम की पत्तियों का प्रयोग कर कई लोगों की शराब पीने की आदत छूट गई। हम प्रार्थना में कहते हैं दुराचार दुर्वृति विंध्वसिनी और सुमार्ग प्रतिप्रेरयन्ति मिह, उसका प्रत्यक्ष क्रियान्वयन इस प्रयोग द्वारा हुआ।

   इसी परिप्रेक्ष्य में सूरत में 14 दिवसीय निःशुल्क धार्मिक सेवा शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें एक दिन डॉक्टरों का सेमिनार (बैठक) भी हुई। इस शिविर में मोटापा, एसिडिटी, मानसिक अवसाद, रक्ताल्पता, वेरिकोज, गेस्ट्रोसायटीस जैसे रोगों का उपचार कर उन्हें रोगों से राहत दिलाई गई।
6. नागपूर महानगर में 81 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 82 सेविकाओं ने विजयादशमी कार्यक्रम में घोष प्रात्यक्षिक किया।
7. अटगांव, यहां पर राजमाता जीजाबाई ट्रस्ट की ओर से वनवासी बहनों का आरोग्य शिविर तथा 45 वनवासी बहनों का गोदभराई कार्यक्रम संपन्न हुआ। हरेक महिला को साड़ी एवं पौष्टिक आहार, जिसमें हरे मूंग एवं खजूर तथा दवाईयां वितरित की गई।

जैसलमेर पथ संचलन

राष्ट्र सेविका समिति जैसलमेर की ओर से नगर में 7 जनवरी 2018 रविवार को विशाल मातृशक्ति पथ संचलन किया गया। इस पथ संचलन के लिये 23 दिसम्बर 2017 से तैयारी चल रही थी। 24 एवं 25 दिसम्बर को पथ संचलन हेतु 260 महिलाओं ने अभ्यास वर्ग में भाग लेकर तैयारी शुरू की। नियमित अंतराल पर महिलाएं एवं बालिकाएं लगातार पथ संचलन हेतु तैयारियां करती रहीं। 5 जनवरी 2018 को सभी ने चलकर पूर्वाभ्यास किया। अभ्यास हेतु महिलाओं को पुरूष वर्ग विद्यालय मैदान में छोड़कर जाते थे। इस कार्यक्रम की संयोजिका श्रीमती आशा जी शर्मा लगातार महिलाओं से संपर्क करके गणवेश वितरण कर रही थीं और जोश भर रही थीं।

इस पथ संचलन को लेकर जैसलमेर की जनता में भी बहुत उत्साह बना हुआ था। संचलन वाले दिन जैसलमेर की गलियां उत्साही जनता के वंदेमातरम् एवं भारत माता की जय घोष से गुंज उठी थी। लोग अपनी दुकानें बंद कर काम-काज छोड़कर इस संचलन को देखने उमड़ पड़े, हर तरफ से सेविकाओं पर पुष्प वर्षा हो रही थी। अखिल भारतीय कार्यवाहिका अन्नदानम्, सीता गायत्री जी भी इस संचलन में थी। दोपहर 1 बजे संपन्न होने के बाद अध्यक्ष श्रीमती कविता जी खत्री एवं प्रमुख कार्यवाहिका जी ने दीप प्रज्वलन किया। प्रांत की कार्यवाहिका डॉ. सुमन रावलोत ने समिति परिचय सभी बहनों के सम्मुख रखा। नगर परिषद चेयरमेन अध्यक्षा श्रीमती कविताजी ने महिलाओं को ऐसे कार्यक्रमों में लगातार जुड़े रहने हेतु प्रोत्साहित किया। प्रमुख कार्यवाहिका जी ने देश की रक्षा प्रहरी सजग महिला शक्ति विषय पर बौद्धिक दिया। उन्होंने कहा कि क्षणिक भावावेश व आंदोलन की तरह यह महिला शक्ति

गुप्त और लुप्त न होकर सदैव अपने दायित्व के प्रति सजग रहे। समिति कार्य से सतत् जुड़े रहने से ही तेजस्वी हिन्दु राष्ट्र का पुनः निर्माण हो सकता है।

प्रमुख कार्यवाहिका जी के उद्‌बोधन के पश्चात कार्यक्रम संयोजिका श्रीमती आशा जी ने धन्यवाद दिया।

पथ संचलन में सबसे पहले स्कूटी वाहिनी थी। खड्गवाहिनी, दण्डवाहिनी, घोषवाहिनी के साथ एक राजपूती पोशाक की वाहिनी भी थी। जिसमें महिलाएं घूंघट में भी चल रही थी। भारत माता की तथा हाडी रानी की झांकी थी। कार्यकर्ता बहनों की संख्या 426 रही। आदर्श विद्या मंदिर गांधी कॉलोनी से आरंभ होकर हनुमान चौराहा स्थित सागरमल गोपा स्कूल में संचलन समाप्त हुआ।

पश्चिम महाराष्ट्र वृत्त निवेदन

पश्चिम महाराष्ट्र प्रांत में पुणे स्थित जीजामाता प्रतिष्ठान के द्वारा पुणे के महिला मंडलों का स्नेह मिलन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह स्नेह मिलन दिनांक 4 जनवरी 2018 को वं. प्रमुख संचालिका मा. शान्ता आक्का जी की उपस्थिति में संपन्न हुआ। इस सम्मेलन में 10 महिला संगठन सहभागी हुए। हर संगठन से 3 से 4 महिलाएं उपस्थित थीं। सभी ने अपना-अपना परिचय देकर अपने कार्य के बारे में जानकारी दी।

वं. प्रमुख संचालिका मा. शान्ता आक्का जी तथा पश्चिम क्षेत्र प्रमुख कार्यवाहिका मा. सुनन्दाताई जोशी इस अवसर पर उपस्थित थीं। जीजामाता प्रतिष्ठान की कार्यकारिणी तथा अधिकारियों ने उपस्थित महिलाओं से चर्चा की। जीजामाता के जीवन से प्रेरणा लेकर जो समिति का ट्रस्ट शुरू किया गया उसके अंतर्गत जो सेवाकार्य एवं शिविर लगाए जाते हैं उसकी सभी को जानकारी दी गई। महिला संगठनों के बीच का समन्वय बनाने तथा बढ़ाने हेतु इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

स्त्री जीवन विकास गौरव पुरस्कार

इस वर्ष 2 फरवरी को स्त्री जीवन विकास परिषद की ओर से सामाजिक कार्य करने वाली कर्तृव्यवान महिलाओं का सम्मान समारोह राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के जिला संचालक डॉ. विवेकानंद बडके की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस समय वं. लक्ष्मीबाई केळकर पुरस्कर उड़ीसा की प्रचारिका सुश्री लतिका पाढ़ी को दिया गया। लतिका विगत 20 वर्षों से उड़ीसा प्रांत में प्रचारिका के रूप में कार्यरत है। उसी प्रकार दूसरा वं. सरस्वति ताई आपटे सेवा पुरस्कार जम्मू की शाला गोडिया को काश्मीर की आतंकवादी गतिविधियों के कारण बाधित परिवार की बच्चियों के संगोपन हेतु विगत गई वर्षों से कार्यरत होने के कारण दिया गया। तीसरा मा. स्व. बकुलताई देवकुळे शुभेच्छा निधि मतिमंद बच्चों का संगोपन करने वाली नागपुर की संस्था संज्ञा संवर्धिनी संस्था को दिया गया।

अध्यक्ष आसंदी से विवेकानंद जी ने महिलाओं का गौरव करते हुए कहा कि अनेक संकटों पर मात करते हुए एक निष्ठा से समाज कार्य करने वाली ये महिलाएं नई पीढ़ी के लिए आदर्श स्वरूप है और यह उनका सम्मान अर्थात् उनके कार्य का सम्मान है। इस कार्यक्रम में राष्ट्र सेविका समिति की प्रमुख संचालिका मा. शान्ता आक्का जी, डॉ. शैलेष देशपाण्डे, वैशाली पडवले, मंजुषा शेण्डे, नमिता दामले इनके साथ अनेक मान्यवर उपस्थित थे।

अखिल भारतीय अर्द्धवार्षिक बैठक

दिनांक 15.02.2018 से 18.02.2018 फाल्गुन वद्य प्रतिपदा से फाल्गुन वद्य तृतीया तक संपन्न हुई। कार्य के प्रारंभ में दीप प्रज्वलन के साथ वं. प्रमुख संचालिका मां. शान्ता आक्का जी ने सभी समाज में कार्यरत प्रेरणा देने वाली दिवंगत सेविका एवं बंधुवर्ग को श्रद्धांजलि समर्पित की।

इसके पश्चात मा. सीताजी (प्रमुख कार्यवाहिका राष्ट्र सेविका समिति) ने इस वर्ष पूरे भारत में हुए विविध समिति कार्यों को संक्षिप्त में प्रतिनिधियों के सामने रखा। दूसरे सत्र में सभी प्रांत कार्यवाहिकाओं ने अपने-अपने प्रांत का विशेष वृत्त विस्तार से सबके सामने रखा। प्रांतों में हुए विशेष पथ संचलन भगिनी निवेदिता सार्धशति कार्यक्रम, महाविद्यालय युवती सम्मेलन, युवा दिवस के कार्यक्रम विशेष प्रेरणादायी रहे। बैठक के अंत में वं. प्रमुख संचालिका मा. शान्ता आक्का जी का प्रेरणादायी उद्बोधन रहा।

वं. प्रमुख संचालिका मा. शान्ता आक्का जी का उद्बोधन :

इस आध्यात्म शक्ति केन्द्र उज्जैन में हमारी बैठक हो रही है। यह केंद्र महाकाल शिव की लयात्मक एवं अमृत तत्व के सृजनात्मक शक्ति का केन्द्र है। आध्यात्म यह माँ के समान होता है जो केवल स्वयं की अपेक्षा वयं का विचार अधिक करती है, यह उसके स्वभाव में ही है और वह संस्कार देने वाली होने के कारण यह हिन्दु संस्कृति में भी निहित है। अतः हमारे प्रत्येक के स्वभाव में भी यह आध्यात्मिक भाव हो यह अपेक्षित है। भगवान शिव लयकर्ता हैं अतः इस दृष्टि से संगठन के लिए प्रतिकूल स्वभाव गुणों का लय हम करें। विरोधी गुणों का सर्वनाश कर संगठन के लिये पूरक गुणों का निर्माण करना यह हमारा स्वभाव गुण हो ऐसा प्रयत्न हम करें। एक शिल्पकार किसी शिलाखण्ड को पहचान कर उसमें से सुंदर मूर्ति की कल्पना करता है और उस मूर्ति के निर्माण में अपनी छिन्नी से अनावश्यक शिलाखण्डों को छिलकर काटकर एक सुंदर कलाकृति का निर्माण अनेक उपचारों के साथ करता है अर्थात अनावश्यक गुणों को छांटकर सुंदर व्यक्तित्व का निर्माण इसी प्रकार करना यही हमारा कार्य है।

आत्म विवेचन और विचार मंथन के साथ हम शाखा के माध्यम से ध्येयपूरक सेविकाओं की संगठित शक्ति का निर्माण कर सकते हैं। हमारा कार्य सही दिशा में चल रहा है कि नहीं, यह देखने के लिये ही हमने शाखा मुख्य शिक्षिका एवं कार्यवाहिका अभ्यास वर्ग की योजना बनाई है।

महाकाल ज्योतिर्लिंग है अर्थात् इसमें उर्जा और प्रकाश दोनों ही है। क्या हम ऐसे प्रकाशवान ज्योतिर्लिंग बन सकते हैं। हम प्रयत्न करें कि हमारी शाखा ऐसी ही स्वयं उर्जा युक्त स्वयं प्रकाशवान हो और आसपास के लिये उर्जा और प्रकाश देने वाला केंद्र बने। हम यहां इस भूमि पर संकल्प लेकर जाएं। यह भूमि संकल्प पूर्ति करने वाले विक्रमादित्य की भूमि है। समाज को दिशा देने वाले और राष्ट्र को शत्रुमुक्त करने वाले, शक हुणों को परास्त कर समाज को भयमुक्त करने वाले विक्रमादित्य का चरित्र अद्भूत है। उससे हम प्रेरणा लेकर कार्य करें।

क्षेत्र की समस्या का संपूर्ण अध्ययन कर योजना बनाकर कार्य प्रारंभ करना चाहिये, उस क्षेत्र की समस्या का कारण एवं निदान खोजकर कार्य करने से सफलता मिलती है। मेरे केरल प्रवास में मैं वहां की प्रबुद्ध महिलाओं से मिली और उनके सामने लव जिहाद का विषय रखा क्योंकि उस क्षेत्र से ही सबसे ज्यादा लड़कियां लव जिहाद की शिकार हुई हैं क्यों ? इसका चिंतन कर निदान खोजकर त्वरित कृति करने का सब प्रबुद्ध बहनों के मन में विचार आया। हम यह कार्य करेंगे ऐसा संकल्प लिया।

प्रत्येक कृति करने के लिए तीन गुणों की आवश्यकता होती है-

1. मन में कार्य करने का उत्साह
2. कार्य की दक्षता
3. मनोधैर्य

मन में विश्वास हो तो असाध्य कुछ भी नहीं है ऐसा वं. मौसीजी कहा करती थीं। कार्यकर्ता के ये तीन गुण उसे उत्तम नेतृत्व प्रदान कर सकते हैं। इसके लिये कोई पद अथवा प्रतिष्ठा की आवश्यकता नहीं। अतः अपने-अपने क्षेत्र में जाकर हमें अपना कार्य यहां की उर्जा और प्रकाश की शक्ति से पूर्ण करना है।

नाशिक की ज्येष्ठ श्रेष्ठ सेविका का सम्मान

नाशिक राणि भवन शाखा की ज्येष्ठ श्रेष्ठ सेविका श्रीमती भानुमति गायधनी का तुलादान कार्यक्रम वहां की सेविकाओं ने किया उनकी पुत्री मा. शोभाजी ने पुस्तकों से उनकी तुला की और राणी भवन में वाचनालय की कमी को पूर्ण किया। इस कार्यक्रम के कारण राणी भवन में एक नया उपक्रम वाचनालय के रूप में प्रारंभ हुआ।

संघमित्रा सेवा प्रतिष्ठान : देवी अहिल्या मंदिर, धंतोली, नागपूर 12.

भगिनी निवेदिता सार्धशति अवसर पर आयोजित परिषद

परिषद में चर्चा का विषय था 'सकारात्मक पालकत्व एक आव्हान'। यही विषय क्यों लिया गया। इस पर कार्यक्रम संयोजिका ने स्पष्ट किया कि इस गतिशील युग में कुटुम्ब व्यवस्था डगमगा रही है, ऐसा पग-पग पर प्रतीत हो रहा है। इसके लिये अनेक कारण हो सकते हैं। कहीं तो भी पैसा और समय का गणित इस व्यवस्था में आड़े तो नहीं आ रहा है ? इन संकल्पनाओं के बारे में भावी पीढ़ी के मन में पालकत्व इस विषय को लेकर क्या सोच रखते हैं, यह जानने के लिये और वैवाहिक सहजीवन समायोजन सामंजस्य इन सब विषयों पर सकारात्मक दृष्टिकोण रखकर नयी पीढ़ी को समझाने का प्रयत्न करेंगे।

इस कार्यक्रम को रोचक बनाने संयोजनकों ने पथनाट्य स्पर्धा का आयोजन किया। संयोजिका वीणा काळे तथा सहसंयोजिका प्राध्यापक डॉ. सौ. स्मिता पत्तरकिन्ने, सौ. ओजस्विनी जामदार एवं मंजुषा पांढरी पाण्डे ने संपूर्ण कार्यक्रम का संयोजन अच्छे प्रकार से किया। इस परिषद का प्रारंभ मा. प्रमिलाताई मेढ़े की उपस्थिति में प्रमुख अतिथि डॉ. चैतन्य शेंबेकर एवं मा. अनुराधा गोरे जी के दीप प्रज्वलन से हुआ।

सर्वदृष्टि से श्रेष्ठ पालकत्व कैसे हो, इस विषय पर डॉ. चैतन्य शेंबेकर का प्रभावी मार्गदर्शन हुआ। उन्होंने स्पष्ट रूप से बताया कि प्रथम संतान प्राप्त करने की उम्र 27 वर्ष के अंदर ही होनी चाहिये एवं दूसरी संतति 30 अथवा 32 वर्ष के अंदर अवश्य हो जानी चाहिए। विज्ञान ने कितनी भी प्रगति की हो अथवा संशोधन किया हो पालकत्व स्वीकारने के लिये मानसिक तैयारी एवं जिम्मेदारी की अनुभूति महत्वपूर्ण है। इसलिये नौकरी करने वाली महिला के काम के घण्टे 6 घण्टे से अधिक न हो, ऐसी 6 घण्टे काम करने वाली महिलाओं का काम पर ध्यान केन्द्रित रहता है। उसके सकारात्मक परिणाम हमें देखने मिलते हैं।

दूसरे सत्र में - सुजाण पालकत्व एक आनंदमय मार्गक्रमण इस विषय पर सुप्रसिद्ध समोपदेशक डॉ. स्वाति धर्माधिकारी ने कार्यशाला की। इस कार्यशाला के माध्यम से उन्होंने सुखी एवं आनंदमय पालकत्व का अनुभव हम कैसे कर सकते हैं इसका एक-एक कर सहज विवेचन किया। इस कार्यशाला को प्रश्नावली के माध्यम से संपन्न किया। 'श्यामची आई' पर आधारित अभिवाचन का प्रयोग में श्याम की मां से आज की मां तक संवाद साधा गया और कालानुसार हम उन संस्कारों का उपयोग बच्चों पर कैसे करें, कर सकते हैं इसका मार्गदर्शन दिया।

तीसरे सत्र में- पथनाट्य एवं परिसंवाद इन्हीं विषयों को लेकर हुआ। इस कार्यक्रम में जी वाहिनी गौरव पुरस्कार प्राप्त श्रीमती अनुराधा गोरे ने सुजाण पालकत्व पर प्रभावी विचार रखे। सौ. मेघा नान्देड़कर, डॉ. अनुराधा रिघोड़कर ने भी अपने विचार रखे। अंत में मा. भारती ताई बंवावाले मा. अनुराधा गोरे ने पुरस्कार वितरण किया। इस अवसर पर श्री सुमन्त टेकाडेजी शिव कथाकार का ओजस्वी वक्तव्य हुआ। विषय था- 'शिवाजी ने जन्म लेना चाहिये' पर मेरे घर में।

आंध्रप्रदेश : वं. शान्ता आक्का जी का प्रवास

1. आंध्रप्रदेश में वं. शान्ता आक्का जी का प्रवास काकीनाडा से प्रारंभ हुआ। यहां प्रबुद्ध जिसमें डॉक्टर, प्रोफेसर, अधिवक्ता, व्याख्याता, शिक्षिकाएं सम्मिलित हुई थीं। संख्या 150 के लगभग थी।

2. विशाखापट्टनम में गृहणियों के साथ ललितापट्टम में मिले, 80 सेविका बहनें थी। सायंकाल प्रबुद्ध बहनों के साथ यहां भी चर्चा सत्र रखे गये थे। कुल उपस्थिति 75 थी।

3. श्रीकाकुलम में समिति कार्यालय में चलने वाले सिलाई केन्द्र का निरीक्षण कर वहां की सिलाई सिखने वाली बहनों के साथ परिचय हुआ।

4. नैलुर में समिति शाखाओं का एकत्रिकरण, जिसमें 12 शाखाओं से 120 सेविकाएं उपस्थित थी।

शाखा के बाद संघ समन्वय के विविध संगठन के कार्यकर्ताओं के साथ बैठक हुई, जिसमें संघबंधु सेवाभारती, एबीवीपी, विश्व हिन्दु परिषद, सदावेदिका आदि 40 कार्यकर्ताओं के साथ वार्ता हुई।

5. सरस्वति शिशु मंदिर तिरूपति में प्रबुद्ध वर्ग के साथ संवाद जिसमें 95 सदस्यों ने भाग लिया।

6. विजयवाड़ा में ट्रस्ट कार्यकारिणी के साथ बैठक।

7. बी.एच.कॉलेज गुटुर में अभिजात वर्गों के व्यक्तियों में एवं विविध क्षेत्र की महिलाओं के साथ चर्चा सत्र, इसमें 45 सदस्यों ने भाग लिया।

मा. शान्ता आक्का जी के साथ प्रांत कार्यवाहिका डॉ. डी. सोमेश्वरी जी साथ में थीं। प्रांत संचालिका श्रीमती विजय भारती जी तिरूपति एवं नैल्लुर में साथ थीं।

समिति छात्रावास परिचय

हमनें निश्चय किया है कि प्रत्येक वार्ता अंक में राष्ट्र सेविका समिति द्वारा संचालित छात्रावासों का संक्षिप्त परिचय देंगे। जम्मू से लेकर कन्याकुमारी तक तथा पश्चिम किनारे से लेकर पूर्वी किनारे तक चलने वाले छात्रावास वहां की स्थानीय समस्याओं एवं आवश्यकताओं को देखते हुए प्रारंभ किए गए हैं। हम यह परिचय की श्रृंखला को जम्मू के अदिति छात्रावास से प्रारंभ कर रहे हैं।

अदिति छात्रावास जम्मू

इस छात्रावास की स्थापना दिसम्बर 1999 में जम्मू में हुई। इस समय इस छात्रावास में 22 छात्राएं रहती हैं। जम्मू-काश्मीर एवं लद्दाख की बच्चियां इस छात्रावास में रहती हैं। कुछ बच्चियां आतंकी हमले से नष्ट हुई परिवारों से तथा गोलियों की शिकार हुई बहनें हैं। कुछ बच्चियां हॉस्पिटल से आई हुई है। छात्रावास में एलकेजी से लेकर कॉलेज में डिग्री कोर्स करने वाली छात्राएं हैं। यहां पढ़ाई के अतिरिक्त बच्चियां कथक नृत्य, चित्रकला एवं योग जैसे विषयों का भी प्रशिक्षण प्राप्त करती है। अब तक इस छात्रावास में 10 बहनें पूरी पढ़ाई कर निकल चुकी है तथा 6 बहनों का विवाह संस्था ने करवाकर अपना कर्तव्य निभाया है। मा. पंकजा जी (प्रचारिका राष्ट्र सेविका समिति एवं अ.भा.घोष प्रमुख) पालक अधिकारी हैं इस वर्ष इस छात्रावास की सेवा करने वाली शीला गोडिया को सरस्वति सेवा पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

गुजरात धार्मिक सेवा विभाग वृत्त

राष्ट्र सेविका समिति एवं श्री धात्रे नमः द्वारा स्वस्थ समाज ... स्वस्थ राष्ट्र के संकल्प से प.पू. चेन्ना केशव शास्त्री जी महाराज के सानिध्य में 14 दिवसीय धार्मिक शिविर का आयोजन किया गया। दिनांक 16/01/2018 से दिनांक 29/01/2018 जिसमें व्यसन मुक्ति तथा अन्य बीमारियों जैसे कि सिरोसीस ऑफ लिवर, सोन्डिस, मोटापा, एसीडीटी, ओस्टियो, आर्थरार्दटिस, ओस्टिया पोरोसिस, कब्ज विटामिन एवं खून की कमी वेरीकोस पेईन, सायटिका, मानसिक बीमारी, डिप्रेशन, माँ के स्तन में बच्चे के लिए दूध कम आना आदि का शिविर निःशुल्क रखा गया।

सामान्य प्रयोग के द्वारा इन बीमारियों से एवं शराब जैसे व्यसन से मुक्ति पाना यह एक साधना, तपस्या एवं वेदविज्ञान के ज्ञाता से ही संभव है।

इन प्रयोगों के बारे में किसी भी वेद शास्त्र या पुस्तक में उल्लेख नहीं है परन्तु परम पूज्यनीय चेन्नई केशव शास्त्रीजी गुरूजी अपनी साधना से ईश्वर के साथ एकाकार होने से इन बीमारियों के आसान-अमंत्र उपाय साधना से प्राप्त लाभ का प्रयोग राष्ट्र के लिए हो और वे लोग स्वस्थ जीवन के साथ राष्ट्र कार्य में अपना योगदान दें हमने इस हेतु शिविर का आयोजन किया।

इस हेतु एक डॉक्टर्स मीट का आयोजन शिविर से 3 दिन पहले दिनांक 13.01.2018 को किया गया, जिसमें 2 घंटे का वार्तालाप डॉक्टर समूह एवं गुरूजी के द्वारा हुआ। जिसमें इन प्रयोग से कैसे लाभ होता है, यह गुरूजी ने बताया।

शिविर के दो भाग थे-

1. व्यसन मुक्ति-

जिसमें अलग-अलग स्थानों से 50 व्यसनी लोगों ने भाग लिया। सुबह स्नान के बाद खाली पेट में आना, नीम के वृक्ष की पूजा करना और माफी मांग के दो नीम के पत्तों को आंख पे लगा के खाना। ऐसा लगातार 14 दिन करना (सूचना : अगर घर में रजंस्वला है, या मृत्युसुतक लगता है तब यह प्रयोग नहीं करना है) कुल 50 में से 34 लोगों का इस सामान्य प्रयोग से बिना किसी भी विपरित परिणाम के दारू जैसे नशे से मुक्ति हुई। उनका परिवार और वे खुद बहुत ही आनंदित हुए।

2. अन्य बीमारियों के लिए सलाह के लिए सुरत महानगर के तीन बड़े भागों में दो-दो दिन तक शिविर लगाए गए-

1. उधना भाग - पांडेसरा

   जहां कोई 34 रोगियों ने विभिन्न बीमारियों के लिए चिकित्सा ली।

2. पर्वतपाटीया भाग

   जहां कुल 84 रोगियों ने विविध बीमारियों के लिए चिकित्सा सलाह ली।

3. अंबिका भाग

   कुल 89 रोगियों ने विविध बीमारियों के लिए चिकित्सा सलाह ली।

तीनों स्थान में 207 रोगियों को जिनको अलग बीमारी के लिए गुरूजी के अलग-अलग प्रयोग बताए। सात दिन बाद सभी रोगियों का फॉलो-अप लिया गया। इस दौरान जिन्होंने प्रयोग किये उनमें से कई रोगियों को लाभ हुआ।

- सोर्यासिस तथा मस्क्युलर डिस्टोर्सन के रोगियों तथा बोलने में तकलीफ, मिट्टी खाना ऐसे रोगियों को भी चिकित्सा सलाह दी गई।
- मोटापा : 3 व्यक्तियों ने शुद्ध देशी गाय के दूध को उपवास करके पीया, इस प्रयोग से पहले तीन दिनों में 3 किलो वजन कम हुआ। दुबारा यह प्रयोग करने से 1 किलो कम हुआ और प्रयोग के दौरान बिलकुल कमजोरी या भूख भी नहीं लगी, चरबी या कैलोरी कम हुई, मेटाबोलीजम संतुलित हुआ।
- गैस, एसीडीटी के रोगियों में से 23 लोगों से जासवन्द के फूल को गाय के घी में डूबा के गैस पे स्नान के बाद जलाने के प्रयोग से सात दिन तक करने से पहले दो-तीन दिन में ही शरीर हल्का महसूस हुआ, वजन न लगना, भूख समय से लगना, एसीडीटी बंद हो गई।
- पाईल्स - मस्सा के 1 रोगी को प्रयोग करने से एक हफ्ते में इस तकलीफ से राहत हुई।
- फिस्टुला के रोगी को केले के पत्ते पे फूल वगैरह चटाके प्रयोग करने से सालों से तकलीफ थी, उसमें राहत मिली।

- मानसिक अस्वस्थ, डिप्रेशन के तथा अस्थिर मन को रोगियों के समुद्र की मिट्टी से स्नान के प्रयोग से कार्य में मन लगना, नींद आना, शांत रहना ऐसे परिवर्तन दिखाई दिए।
- वेरीकौस वेन के 1 रोगी को भी सुखे खजूर (छुहारा) को भोग लगाके खाने के प्रयोग से ज्यादा समय तक खड़ा रहने के बाद भी रोगी को दर्द न होना यह लाभ मिला है।
- डिलीवरी के बाद माँ को बच्चे के लिए दूध न आने वाली महिला को गाय का दूध भोग लगाके पीने से दूध आने लगा, दो दिन से यह रिजल्ट मिला।
- डिप्रेशन के रोगी को रात में नींद न आने की तकलीफ से मुक्ति मिली, समुद्र की मिट्टी से सात दिन स्नान करके पूजा करना।
- गौमूत्र, भस्म स्नान से शरीर में नवीन उर्जा का संचार महसूस हुआ और पारिवारिक क्लेश या घर के वातावरण में परिवर्तन आया।
- हीमोग्लोबीन की कमी में खजूर में शहद मिलाके भोग लगाके खाने से शरीर में स्वस्थता एवं शक्ति की अनुभूति हुई।
- पेशाब में वीर्य निकलना इस रोगी को गौमूत्र एवं भस्म वाले पानी से स्नान करने से एक ही दिन में 100% राहत मिली।
- कब्ज के लिए कार्तिकेय देवता की माफी भोंग के कीये जाने वाले प्रयोग में तुरन्त ही पेट साफ होना और शरीर में स्फूर्ति आना।
- स्मरणशक्ति के लिए हनुमान जी की परिक्रमा करना, पान के पत्ते पे सफेद फूल चढ़ाके पूजा करने से एकाग्रता बढ़ी।
- आर्थराइटिस के लिए नागरवेल के पान के पत्ते को भोग लगाने के बाद सुबह-शाम 3-3 पत्ते चूना लगाकर खाने से कुछ दिनों के बाद दर्द से राहत हुई।
- पूर्व दिशा में कपूर की आरती करके लेने से सकारात्मक उर्जा मिलती है।
- सोर्यासीस में गाय के घी लगाने के प्रयोग अभी शुद्ध है।
- तिल, गुड के लड्डू 15 दिन तक खाना पहले दिन उपवास रखना इस प्रयोग से भी जोड़ों के दर्द में कई रोगियों को आराम मिला।

यह सभी प्रयोग सबने सात दिन या दस दिनों तक किया। जब भी तकलीफ हो, यह प्रयोग फिर से कर सकते हैं। कुछ लोग को रजस्वला या मृत्युसूतक के कारण यह प्रयोग नहीं कर पाए। श्रद्धा से गुरूजी के बताए गये प्रयोग करने से तकलीफ से मुक्ति मिलती है।

माफी मांग के कर्म का प्रायश्चित करने से और यह प्रयोग से लाभ अवश्यय होगा। प.पू. शास्त्रीजी द्वारा अनुभूत प्रयोग से कई लोगों की व्यसन से मुक्ति मिली है और बीमारियों से भी मुक्ति मिली है इस धार्मिक सेवा शिविर में आने के लिए राष्ट्र सेविका समिति, सुरत महानगर उनका आभार व्यक्त करती है।

स्वस्थ समाज की और यह भी हमारा एक ओर कदम है।

॥ भारत माता की जय ॥

संस्कारों और राष्ट्र निर्माण की पाठशाला है परिवार : डॉ. जैन

एसडीवीएम जूनियर विंग में रविवार को राष्ट्र सेविका समिति हरियाणा के धार्मिक विभाग की संस्कारों की निर्माण शाला-परिवार में परिवार को संस्कारवान बनने का आव्हान किया। इस दौरान अतिथि देवोभव की परंपरा को बताते हुए जरूरतमंदों की सेवा के लिए आगे आने का भी आव्हान किया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता रहे विश्व हिंदू परिषद के संयुक्त महामंत्री डॉ. सुरेन्द्र जैन ने कहा कि परिवार संस्कारों की पाठशाला ही नहीं बल्कि राष्ट्र निर्माण की पाठशाला है। विदीशी यह सोचकर हैरान हैं कि कितने वर्षों तक हम एक साथ कैसे रहते हैं।

हमारे यहां संयुक्त परिवार है। इस दौरान डॉ. जैन, यहां राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ कुरूक्षेत्र विभाग के सह विभाग संघचालक रमेश जी, जिला संघचालक अनूप, डॉ. अंजली जैन जी, सीमा गुप्ता जी व सीमा जी मौजूद रहीं।

वं. ताई जी कहती थीं - सेविका कैसी हो...

1. शरीर सुदृढ़ हो
2. मन निडर हो
3. नजर तेज हो
4. दृष्टि तीक्ष्ण हो
5. अविरत कार्य करने वाली हो
6. हृदय में प्रेम हो
7. निष्ठा हो, वाणी में मिठास हो,
8. मुद्रा हसमुंख प्रसन्न हो
9. स्वयं स्फूर्त हो
10. समाज में घुल-मिल जाने की वृत्ति हो तथा एक ज्योति से दूसरी ज्योति प्रज्जवलित करने का स्वभाव हो।

, इस प्रकार बिंदू-बिंदू जोड़कर सरिता उससे फिर अपने आप सागर बन जायेगा।

:: गौरव ::

श्री दामोदर गणेश बापट जी

तेजस्विनी सेवा प्रतिष्ठान एवं छात्रावास के प्रणेता श्री दामोदर गणेश बापट जी को पद्मश्री पुरस्कार घोषित हुआ है। हम सब गौरवान्वित हुए हैं।

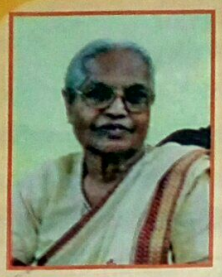

स्मरण तुम्हारा...नमन हमारा

:: विनम्र श्रद्धांजली ::

मा. मीनाताई देव-

शान्त स्वभाव व्यवस्थित काम, सुंदर हस्ताक्षर, इन विशेषताओं की धनी मा. मीनाताई देव अचानक हमारे बीच से चल बसीं। अनेक वर्षों तक अहिल्या मंदिर में रहकर अपनी सेवा देने वाली मीनाताई, वहां आने वाले प्रत्येक व्यक्ति की अपनत्व से पूछताछ करती थी। प्रत्येक कार्यकर्ता की चिंता करना यह उनका मूल स्वभाव था।

मा. लीला रंगनाथन -

मा. लीला जी सर्वप्रथम 1969 में शिमोगा वर्ग में शिविरार्थी थी। वहां से वे तमिलनाडू गई और समिति कार्य का प्रथम बीजरोपण उनके द्वारा किया गया। वे तमिलनाडु की प्रथम सेविका थीं। बाद में वे 10 वर्षों तक पुरे समय तक कार्य करती रहीं। मा. स्व. कुसुमताई जी साठे के साथ केरल का काम भी उन्होंने संभाला था। 19 फरवरी को चैन्नई में उन्होंने अपनी अंतिम सांस ली।

मा. मालूताई गोखले- मुंबई में स्त्री जीवन विकास एवं गृहिणी विद्यालय में आपने सचिव के नाते काम देखा, वहां की आप ट्रस्टी थीं।

मा. उज्जवलाताई आपटे - वं. ताई जी की बहू थी। शांत स्वभाव की सबका स्वागत करने वाली थी।

मा. उषाताई जोशी - तीनों बेटे प्रचारक निकले, नागपुर की शाखा की विभाग कार्यवाहिका नागपूर के 86 के सम्मेलन में संपूर्ण निवास व्यवस्था उन्होंने संभाली थी।

मा. सरलाताई गायधनी- रानी भवन नासिक की पुरानी सेविका।

मा. अल्काताई खानखोजे - तेजस्विनी सेवा प्रतिष्ठान बिलासपुर की फाउण्डर मेम्बर समिति की पुरानी सेविका।

खड़ीवाले वैद्य - आयुर्वेदिक डॉक्टर थे। आपने तलेगांव का स्थान समिति के सेवा प्रकल्प हेतु प्रदान किया था।

घनश्याम दास जी (काकाजी)- मूलतः हैदराबाद के ज्वेलर्स। आपका सभी सेवा कार्यों के लिए आपका सहयोग रहा। हॉफलॉग के छात्रावास में भी आपका सहयोग रहा।

मा. सुमित्राताई राजे- अ.भा. सहकार्यवाहिका मा. रेखाताई राजे की आप माताजी थी। आपने अपने तीनों बच्चों को समाज सेवा हेतु प्रेरित किया। स्व. श्री अशोक सिंघल जी माताजी को बहुत मानते थे।

स्व. श्री मनोहर टिपरे- आप अ.भा.सेवा प्रमुख मा. संध्याताई टिपरे के पिताजी थे।

इसके साथ ही सीमा पर राष्ट्र सुरक्षा करते-करते शहीद हुए सेना के वीर जवान एवं नक्सल क्षेत्र में लड़ते-लड़ते शहीद हुए सैनिकों को शत्-शत् नमन एवं सेविकाओं की विनम्र श्रद्धांजली।

नववर्ष की शुभकामनाएं...

नवीन वर्ष की नवप्रभात से, नई प्रेरणा लेकर जाएं

सकारात्म ले सोच हृदय में, जीवन को निज गढ़ते जाएं

भारत के हर प्रान्त ग्राम में, भगवत् ध्वज अपना फहराएं

वैभव के इस मानबिंदु की, रक्षा का व्रत हम अपनाएं।

प्रिंटेड मेटर बुक-पोस्ट

नाम .....

पता .....

.....

.....

पिनकोड ..... मो. .....